हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -02 ♦ अंक-15 ♦देहरादून - रविवार 010 फरवरी 2026 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्यः 1/-

मुख्यमंत्री ने रोजगार एवं स्वरोजगार से जुड़ी विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को सचिवालय में कृषि, पशुपालन, पर्यटन एवं उद्योग क्षेत्रों से जुड़ी विभिन्न योजनाओं की समीक्षा की। उन्होंने अधिकारियों को

निर्देश दिए कि सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं के माध्यम से लोगों को रोजगार एवं स्वरोजगार से जोड़ने की दिशा में विशेष ध्यान दिया जाए। 'जन-जन की सरकार, जन-जन के द्वार' अभियान के माध्यम से लोगों को इन योजनाओं की संपूर्ण जानकारी प्रदान की जाए, ताकि वे इनका लाभ उठा सकें। मुख्यमंत्री ने युवाओं के कौशल विकास पर विशेष ध्यान देने तथा उन्हें स्वरोजगार के लिए अधिकतम अवसर उपलब्ध कराने की दिशा में प्रभावी कार्य करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि पात्र लोगों को योजनाओं का समय पर एवं पूरा लाभ मिले, इस पर सभी विभाग विशेष ध्यान दें। साथ ही यह भी सुनिश्चित किया जाए कि आवंटित बजट का पूर्ण आउटकम प्राप्त हो। मुख्यमंत्री ने निर्देश दिए कि उच्च स्तरीय बैठकों के कार्यवृत्त उन्नति पोर्टल पर अनिवार्य रूप से अपलोड किए जाएं। उन्होंने सेब की अतिसघन बागवानी योजना की समीक्षा करते हुए कहा कि इस महत्वाकांक्षी योजना को प्रभावी ढंग से संचालित कर निधारित लक्ष्यों को समय से प्राप्त किया जाए तथा किसानों को अधिकाधिक प्रोत्साहन प्रदान किया जाए। यह भी सुनिश्चित किया जाए कि किसानों से संबंधित देयकों का भुगतान समय पर हो। किसानों को उनके उत्पादन का बेहतर मूल्य मिले, इसके लिए राज्य में कीवी उत्पादन को बढ़ावा देने की दिशा में तेजी से कार्य किया जाए। मुख्यमंत्री ने कहा कि शहद उत्पादन के क्षेत्र में उत्तराखंड में व्यापक संभावनाएं हैं। इसे देखते हुए 'हनी मिशन' के अंतर्गत शहद उत्पादन को बढ़ावा देने के लिए और अधिक प्रभावी प्रयास किए जाएं। राज्य में शहद का ऑर्गेनिक सर्टिफिकेशन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि बागवानी एवं मौन पालन के क्षेत्र में जिन राज्यों में अच्छा कार्य हुआ है, उनके अध्ययन हेतु अधिकारियों एवं विशेषज्ञों की टीमें उन राज्यों में भेजी जाएं। बैठक में जानकारी दी गई कि प्रदेश के 29 उत्पादों को जी.आई. टैग प्राप्त हुआ है, जिनमें से 18 कृषि एवं कृषि कल्याण से संबंधित हैं। इस वर्ष 25 अन्य उत्पादों को जी.आई. टैग के लिए चिन्हित किया जाएगा। राज्य में 134 करोड़ रुपये की लागत से लागू स्टेट मिलेट पॉलिसी के अंतर्गत मंडुवा, झंगोरा, रामदाना, कौणी एवं चीना को शामिल किया गया है। इसके अंतर्गत प्रथम चरण में 30 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल के 24 विकासखंडों तथा द्वितीय चरण में 40 हजार हेक्टेयर क्षेत्रफल के 44 विकासखंडों का चयन किया गया है। प्रथम चरण में 5 हजार से अधिक गांवों को आच्छादित कर लगभग डेढ़ लाख कृषकों को लाभान्वित किया गया है। मिलेट फसलों की क्रय-विक्रय हेतु 216 क्रय केंद्र खोले गए हैं तथा सहकारिता विभाग के अंतर्गत 20 करोड़ रुपये का रिवाल्विंग फंड बनाया गया है। इस वित्तीय वर्ष में 5 हजार मीट्रिक टन के लक्ष्य के सापेक्ष अब तक 5,386 मीट्रिक टन मिलेट फसलों का क्रय किया जा चुका है। बैठक में यह भी जानकारी दी गई कि मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना एवं मुख्यमंत्री स्वरोजगार योजना 2.0 के अंतर्गत चार वर्षों में 32 हजार के लक्ष्य के सापेक्ष 33,620 लाभार्थियों को 202.72 करोड़ रुपये की धनराशि उपलब्ध कराई गई है। आगामी वर्ष में 9 हजार लोगों को लाभान्वित किए जाने का लक्ष्य निधारित किया गया है। पर्यटन विभाग के अंतर्गत दीन दयाल उपाध्याय होम स्टे योजना के तहत चार वर्षों में 780 होम स्टे स्थापित किए गए हैं, जिसके लिए 188.58 करोड़ रुपये का वित्त पोषण किया गया है। वीर चंद्र सिंह गढ़वाली पर्यटन स्वरोजगार योजना के अंतर्गत चार वर्षों में एक हजार से अधिक लोगों को लाभान्वित किया गया है, जिसमें कुल 105 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि का वित्त पोषण किया गया है। राज्य में प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के अंतर्गत मत्स्य पालन क्षेत्र में 17,450 लोगों को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार प्राप्त हुआ है। बैठक में कैबिनेट मंत्री सतपाल महाराज, गणेश जोशी, प्रमुख सचिव डॉ. आर. मीनाक्षी सुंदरम, सचिव नितेश झा, दिलीप जावलकर, विनय शंकर पाण्डेय, एस.एन. पाण्डेय, वी. षणमुगम, धीराज गर्ब्याल सहित संबंधित विभागों के उच्च अधिकारी उपस्थित रहे।

सीएम धामी ने छात्र कौशल संवर्धन हेतु लैब ऑन व्हील्स का फ्लैग ऑफ किया

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने गुरुवार को मुख्यमंत्री कैंप कार्यालय से छात्र कौशल संवर्धन हेतु लैब ऑन व्हील्स

(इंफोसिस स्प्रिंगबोर्ड) का फ्लैग ऑफ किया। यह लैब ऑन व्हील्स छात्रों को ए.आई, कोडिंग, आईओटी एवं अन्य इमर्जिंग टेक क्षेत्रों में कौशल संवर्धन के लिए हैण्ड्स ऑन सुविधा उपलब्ध कराएगा। इसके साथ ही विज्ञान विषय के विभिन्न प्रयोगों को वर्चुअल मोड से सीखने में सहायता प्रदान करेगा। लैब ऑन व्हील्स छात्रों को लर्निंग बाई डूइंग के लिए बेहतर प्लेटफॉर्म उपलब्ध कराएगा। इंफोसिस स्प्रिंगबोर्ड लैब ऑन व्हील्स आगामी 05 वर्ष तक पूरे राज्य संस्थाओं में जाकर छात्रों को जागरूक करते हुए उनको हैण्स ऑन प्रशिक्षण प्रदान करेगा और उनको वैश्विक संभावनाओं से जोड़ेगा। लैब ऑन व्हील्स राज्य में छात्रों के लिए हैण्स ऑन प्रशिक्षण की अनुपलब्धता को न्यून करेगा। लैब ऑन व्हील्स में उपलब्ध हैण्ड्स ऑन एवं प्रैक्टिकल्स उच्च शिक्षा, तकनीकी शिक्षा एवं विद्यालयी शिक्षा ग्रहण कर रहे छात्रों हेतु उपयोगी है। इस अवसर पर विधायक श्रीमती सविता कपूर, प्रमोद नैनवाल,उच्च शिक्षा उन्नयन समिति के उपाध्यक्ष डॉ. देवेन्द्र भसीन, डॉ. जयपाल सिंह चौहान, सचिव उच्च शिक्षा डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा, उच्च शिक्षा, तकनीकि शिक्षा के अधिकारी एवं इंफोसिस प्रतिनिधि उपस्थित थे।

नर्सिंग बेरोजगारों के आंदोलन को उक्रांद का समर्थन

देहरादून। नर्सिंग भर्ती वर्षवार करने की मांग पर आंदोलन कर रहे नर्सिंग बेरोजगारों को उक्रांद ने गुरुवार को समर्थन दिया। एकता विहार में नर्सिंग एकता मंच का धरना गुरुवार को 56वें दिन भी जारी रहा। उक्रांद के सैनिक प्रकोष्ठ के महानगर अध्यक्ष सूबेदार वीर सिंह पवार और केंद्रीय उपाध्यक्ष आशुतोष नेगी सहित अन्य नेताओं ने धरना स्थल पर पहुंचकर बेरोजगारों की समस्याएं सुनीं। नेताओं ने कहा कि 56 दिन बीत जाने के बाद भी सरकार के किसी प्रतिनिधि का आंदोलनकारियों से सुध न लेना दुर्भाग्यपूर्ण है। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि जल्द ही मूल निवासी युवाओं की जायज मांगों का समाधान नहीं हुआ, तो नर्सिंग एकता मंच के साथ मिलकर प्रदेश व्यापी बड़ा आंदोलन किया जाएगा। इस दौरान कैप्टन खुशहाल सिंह गढ़िया, नवल पुंडीर, यश नेगी, प्रवेश रावत, शिरा बांधनी, उपेंद्र, पपेंद्र बिष्ट, हेमंत, नीमा और पवन सहित आदि मौजूद रहे।

अमर्यादित व्यवहार पर राष्ट्रपति को ज्ञापन

देहरादून। मौनी अमावस्या पर प्रयागराज में ज्योतिष्पीठाधीश्वर स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद सरस्वती के साथ हुए कथित अमर्यादित व्यवहार के विरोध में भारतीय गौक्रान्ति मंच व गौसेवी संगठनों ने गुरुवार को जिलाधिकारीके माध्यम से राष्ट्रपति को ज्ञापन भेजा। संगठनों ने निष्पक्ष न्यायिक जांच की मांग करते हुए दोषियों को दंडित करने की अपील की। ज्ञापन सौंपने में भारतीय गौक्रान्ति मंच अध्यक्ष आचार्य सीताशरण महाराज, महासचिव विकास पाटनी, आनन्द सिंह रावत, यशवन्त सिंह रावत, अनुसूया प्रसाद उनियाल, कमल किशोर भट्ट समेत कई गौसेवी शामिल रहे।

गौमाता में बसती है सनातन की आत्मा: सतपाल महाराज

देहरादून(आरएनएस)। सनातन की आत्मा गौमाता में निवास करती है। आज के समय में जब समाज अपनी जड़ों से दूर होता जा रहा है। ऐसे में गौमाता की गुम होती भूमिका और महत्व को समझाने का प्रयास फिल्म 'गोदान' के माध्यम से किया गया है। ये बात पर्यटन, धर्मस्व एवं संस्कृति मंत्री सतपाल महाराज ने गुरुवार को सुभाष रोड स्थित अपने कैंप कार्यालय में कामधेनु इंटरनेशनल प्रोडक्शन के बैनर तले बनी फिल्म 'गोदान' के टीजर, गीत और पोस्टर लांच के दौरान कही। उन्होंने कहा कि बॉलीवुड फिल्म इंडस्ट्री एक बदलाव के दौर से गुजर रही है

सम्पादकीय

चारधाम शीतकालीन यात्रा

गंगोत्री,यमुनोत्री च,बद्रीकेदारनाथय:।
चतुर्धामं समायाति, पुण्यभूमौ दिवं यथा।।
धर्मयात्रा शुभं यातु, भक्तजनहिताय च।
देवभूमौ सदा तिष्ठेत, हरिहराणां कृपारसा।।

अर्थात

गंगोत्री,यमुनोत्री,बद्रीनाथ और केदारनाथख्ये चार धाम मिलकर पुण्यभूमि में दिव्य-स्थान बनाते हैं।

पिछले वर्ष से शुरू हुई शीतकालीन यात्रा के बाद पहाड़ में तीर्थाटन में तस्वीर बदली है। शीतकाल में भी चारधामों के प्रवास स्थलों पर तीर्थयात्रियों की चहल-पहल बढ़ रही है। राज्य सरकार के अथक प्रयासों से उत्तराखंड की शीतकालीन यात्रा एक नया अध्याय लिख रही है। चारधामों से संबंधित ऊखीमठ, पांडुकेश्वर, जोशीमठ, मुखवा और खरसाली जैसे शीतकालीन प्रवास स्थलों में देश दुनिया से तीर्थयात्री पहुंच रहे हैं। इस बार चार धाम यात्रा के कपाट बंद होने के बाद से आज तक 35,140 श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं। अभी ढाई महीने शीतकालीन यात्रा और चलनी है।

शीतकालीन यात्रा में सबसे ज्यादा यात्री बाबा केदारनाथ के गद्दीस्थल ऊखीमठ पहुंचे हैं।ओंकारेश्वर मंदिर ऊखीमठ में 20 हजार से अधिक श्रद्धालुओं ने बाबा केदार के पूजा अर्चना कर दर्शन किए। एक से डेढ़ हजार यात्री प्रतिदिन उत्तराखंड पहुंचकर शीतकालीन प्रवास स्थलों पर दर्शन कर रहे है। आध्यात्मिक यात्रा यूं चलती रहे, यही कामना है।

य देवभूमि उत्तराखंड!!जय भारत!!

डॉ गार्गी मिश्रा

व्यक्ति को अमृत कर देती हैं भावनाएं

सच मानिए, भावना व्यक्ति को अमृत कर देती है। जिन्हें इस सच पर विश्वास न हो, वे श्रीकृष्ण और सुदामा की उस मुलाकात को याद कर लें, जब अपने बाल-सखा सुदामा के चरणों को द्वारिकाधीश ने आंसुओं के गंगा-जल से धोया था। याद कीजिए पन्ना धाय के उस त्याग को, जिसके बल पर उसने राजकुंवर को बचाने के लिए अपना पुत्र शत्रुओं को सौंप दिया। त्याग की भावना को विश्व की सर्वोच्च पावनतम भावना माना गया है। संत तिरुवल्लुवर का कथन है 'जिन्होंने सब कुछ त्याग दिया, वे मुक्ति के मार्ग पर हैं, बाकी सब मोहजाल में फंसे हुए हैं।' और कविकुल गुरु रवींद्रनाथ ठाकुर कहते हैं कि 'प्रेम के बिना त्याग नहीं होता और त्याग के बिना प्रेम असंभव है।' त्याग की भावना पर मुझे कविवर गजानन माधव मुक्तिबोध की पंक्तियां याद आती हैं। वे कहते हैं :-

'अब तक क्या किया? जीवन क्या जिया?
ज्यादा लिया और दिया बहुत-बहुत कम,
मर गया देश, अरे! जीवित रह गए तुम?'

आज मुझे इसी 'त्याग-भावना' पर मेरे एक आत्मीय ने ऐसी पोस्ट भेजी है।

'शहर के एक अंतर्राष्ट्रीय प्रसिद्धि के विद्यालय के बगीचे में तेज धूप और गर्मी की परवाह किये बिना, बड़ी लगन से पेड़-पौधों की काट-छांट में वह लगा हुआ था कि तभी विद्यालय के चपरासी की आवाज सुनाई दी, अरे! गंगादास! तुझे प्रधानाचार्या जी तुरंत बुला रही हैं।' गंगादास शीघ्रता से उठा, हाथों को धोकर साफ किया और तेजी से प्रधानाचार्या के कार्यालय की ओर चल दिया। गंगादास एक ईमानदार कर्मचारी था और अपने कार्य को पूर्ण निष्ठा से पूर्ण करता था। वह प्रधानाचार्या के कार्यालय पहुंचा, 'मैडम, क्या मैं अंदर आ जाऊं? आपने मुझे बुलाया था।'

'हां, आओ और यह देखो' प्रधानाचार्या गंगादास से बोली। उनकी उंगली एक पेपर की ओर इशारा कर रही थी। 'पढ़ो इसे' प्रधानाचार्या ने आदेश दिया। 'मैं तो इंग्लिश पढना नहीं जानता मैडम!' गंगादास ने घबरा कर उत्तर दिया। 'मैं आपसे क्षमा चाहता हूं मैडम। यदि कोई गलती हो गयी हो तो। मैं आपका और विद्यालय का पहले से ही बहुत ऋणी हूं, क्योंकि आपने मेरी बिटिया को इस विद्यालय में नि:शुल्क पढने की इजाजत दी है।' गंगादास बिना रुके घबरा कर बोलता चला जा रहा था।

प्रधानाचार्या ने गंगादास को टोका, 'तुम बेकार में अनुमान लगा रहे हो। थोड़ा इंतजार करो, मैं तुम्हारी बिटिया की क्लास टीचर को बुलाती हूं।' गंगादास सोच रहा था कि क्या उसकी बिटिया से कोई गलती हो गयी? अब तो उसकी चिंता और बढ़ गयी थी। क्लास टीचर के पहुंचते ही प्रधानाचार्या बोली, 'हमने तुम्हारी बिटिया की प्रतिभा को देख और परख कर ही उसे अपने विद्यालय में पढने की अनुमति दी थी। अब ये मैडम इस पेपर में जो लिखा है, उसे पढकर हिंदी में तुम्हें सुनाएंगी।' कक्षा-अध्यापिका बोली, 'आज 'मदर्स डे' था, मैंने कक्षा में सभी बच्चों को अपनी अपनी मां के बारे में एक लेख लिखने को कहा। अध्यापिका ने गंगादास की बेटी का लिखा हुआ लेख पढना शुरू किया। 'मैं एक गांव में रहती थी। एक ऐसा गांव, जहां शिक्षा और चिकित्सा की सुविधाओं का आज भी अभाव है। चिकित्सा के अभाव में कितनी ही मांयें दम तोड़ देती हैं बच्चों के जन्म के समय। मेरी मां भी उनमें से एक थीं। उन्होंने मुझे छुआ भी नहीं कि चल बसीं। मेरे पिता ही वे पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने मुझे गोद में लिया। बाकी की नजर में तो मैं 'अपनी मां को खा गई' थी। मेरे दादा-दादी चाहते थे कि मेरे पिताजी दुबारा विवाह करके एक पोते को इस दुनिया में लायें ताकि उनका वंश आगे चल सके, परंतु मेरे पिताजी ने उनकी एक न सुनी और दुबारा विवाह करने से मना कर दिया। इस वजह से मेरे दादा-दादीजी ने उनको अपने से अलग कर दिया और पिताजी सब कुछ, जमीन, खेतीबाड़ी, घर की सुविधा आदि छोड़ कर, मुझे साथ लेकर, शहर चले आये और इसी विद्यालय में माली का कार्य करने लगे। मेरी जरूरतों पर मां की तरह हर पल उनका ध्यान रहता है।'

'यदि संक्षेप में कहूं कि प्यार, देखभाल, दयाभाव और त्याग मां की पहचान हैं, तो मेरे पिताजी उस पहचान पर पूरी तरह से खरे उतरते हैं और मेरे पिताजी विश्व की 'सबसे अच्छी मां' हैं। आज 'मातृ दिवस' पर मैं अपने पिताजी को यही कहूंगी कि आप संसार के सबसे अच्छे पालक हैं। बहुत गर्व से कहूंगी कि ये जो हमारे विद्यालय के परिश्रमी माली हैं, ये मेरे पिता हैं।' लेख के आखिरी शब्द पढ़ते-पढ़ते अध्यापिका का गला भर आया था और प्रधानाचार्या के कार्यालय में शांति छा गयी थी। इस शांति में केवल माली गंगादास के सिसकने की आवाज सुनाई दे रही थी। वह केवल हाथ जोड़ कर वहां खड़ा था। उसने उस पेपर को अध्यापिका से लिया और अपने हृदय से लगाकर फूट-फूट कर रो पड़ा।

संकटकाल में नयी चाल में ढला साहित्य

निस्संदेह, कोरोना काल में मानवीय त्रासदी का चरम दिखा, जिसने रचनाकारों को उद्वेलित किया। इस काल के सृजन में मानवीय त्रासदी की गहरी छाया रही। इस दौरान साहित्य ने अपनी चाल बदली। विपुल साहित्य का सृजन हुआ। डिजिटल माध्यम की स्वीकार्यता बढ़ी।?लेकिन पुस्तक छपवाने का मोह कम नहीं हुआ। प्रकाशकों का काम बढ़ा। इस दौरान हमने अनेक नामचीन साहित्यकारों को भी?खोया।

एक महामारी ने पूरी जीवन शैली बदल दी। तकरीबन दो सालों से हम सब के बीच फासले बढ़ गए। सोचने-समझने और लिखने-पढने के तौर-तरीकों में बदलाव आया और साहित्य सृजन की दृष्टि भी काफी हद तक बदल गई। कोरोना काल में साहित्य रचने का यह दूसरा साल था। लॉकडाउन भले ही कुछ महीनों का रहा हो, लेकिन इसका असर दीर्घकालिक है। वर्ष 2021 के इस सबसे भयानक कालखंड में हमारे बीच से बहुत से लोग, रचनाकार, पत्रकार, लेखक, संस्कृतिकर्मी चले गए। कुछ रचते हुए चले गए, कुछ रचने की बहुत-सी योजनाओं को साथ लिए चले गए। सन् 2020 के कोरोना कालखंड में जहां मजदूरों का पलायन और सडकों पर मजबूरन धकेल दिए गए श्रमिकों का दर्द रचनाओं में झलकता रहा तो इस बार लगातार और असमय अलविदा कह देने वालों से जुड़ी मानवीय पीड़ा और एक बेबसी दिखाई देती रही। रचनाकार या तो सदमे में रहा, लिखने-पढने से विरक्ति का शिकार रहा, या फिर रचा तो इतना रचा कि उसकी सारी संवेदनाएं अपने विभिन्न रूपों में सामने आती रहीं। कविताएं हों, कहानियां हों, डायरी के पन्ने हों, उपन्यास हों या संस्मरणख्र इस दौर में जो भी लिखा गया, ज्यादातर में इसकी झलक मिली। सत्ता के प्रति गुस्सा, संवेदनहीन सरकार और बेबस प्रशासन की अव्यवस्थाएं, अस्पतालों की भयावहता, ऑक्सीजन को लेकर त्राहि-त्राहि और सरकारों के दावे, वैक्सीनेशन की सरकारी प्रतियोगिताएं और सबसे ज्यादा उन परिवारों और व्यक्तियों की त्रासदी जो या तो अचानक चले गए, या अव्यवस्थाओं के शिकार होकर अलविदा कह गए। कोरोना काल में डिजिटल हो चुके देश में वैसे तो अब ज्यादातर साहित्य फेसबुक या सोशल मीडिया पर रचा जा रहा है, लेकिन ये प्लेटफॉर्म बस आपके डायरी के पन्नों की तरह है। आखिरकार सभी की यह चाहत रहती है कि उनका यह रचनाकर्म पुस्तक के रूप में आए, बेशक इसके लिए पैसे खर्च करके प्रकाशकों की तलाश की जाए और अपने हिस्से का साहित्य रच दिया जाए। ज्यादातर लेखक और कवि चाहते हैं कि उनकी कोई न कोई किताब पुस्तक मेलों में जरूर आए ताकि कम से कम उनके रचनाकर्म को एक पहचान मिल सके। लखनऊ समेत तमाम शहरों में पुस्तक मेले लगने शुरू हो गए हैं और एक बार फिर जनवरी के दूसरे हफ्ते में दिल्ली में विश्व पुस्तक मेले की तैयारी है। वर्ष 2021 में छपी हजारों पुस्तकों को एक बड़ा आयाम यहां मिलने जा रहा है। प्रकाशकों के पास पुस्तकों के जबरदस्त ऑर्डर हैं और तमाम पुस्तकें छपने के अंतिम चरण में हैं। प्रकाशकों के लिए यह वक्त बहुत मुफीद होता है और कोरोना काल ने तो उनका प्रिंट ऑर्डर काफी बढ़ा दिया है। तमाम प्रकाशक बताते हैं कि कोरोना काल से उन्हें कोई फर्क नहीं पड़ा है, बल्कि पहले से कहीं ज्यादा किताबें इस बार छप रही हैं। कोरोना काल में घर बैठे लोगों ने खूब लिखा है। सबसे बड़ी बात कि अब किताबों को बेचने के लिए पुस्तक मेलों के अलावा अमेजॉन, फ्लिपकार्ट जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म उपलब्ध होने से काफी सहूलियत हो गई है, इसलिए बड़ी संख्या में किताबें छप भी रही हैं और बिक भी रही हैं। किताबें छपवाने के लिए कई लेखक प्रकाशकों को मोटी धनराशि भी देने लगे हैं इसलिए आम तौर पर प्रकाशन के व्यवसाय पर कोई खास असर नहीं पड़ा है। फिर भी कई प्रकाशक ऐसे भी हैं, जिनके लिए मुश्किलें बढ़ गईं और उन्हें अपने कर्मचारियों की छंटनी भी करनी पड़ी।

कोरोना काल में 2021 का विश्व पुस्तक मेला पहली बार डिजिटल माध्यम से जनवरी की जगह मार्च के पहले हफ्ते में चार दिनों के लिए 6 से 9 मार्च तक आयोजित हुआ। कोरोना की पहली लहर से धीरे-धीरे स्थितियां सामान्य होती दिख रही थीं, लेकिन लोगों में डर था, ढेर सारी पाबंदियां थीं और अगले ही महीने कोरोना का सबसे खतरनाक दूसरा दौर आया जो तमाम लोगों पर कहर बनकर टूटा और एक बार फिर दहशत से भरी जिंदगी घरों में कैद हो गई। फेसबुक और सोशल मीडिया मौत की सूचनाओं के अलावा अस्पतालों की चरमराई व्यवस्थाओं से भरा रहा। इसी दौरान तमाम लेखकों ने फेसबुक पर रोजाना साहित्य रचना शुरू कर दिया। जाने-माने कवि मदन कश्यप कहते हैं कि 2020 के लॉकडाउन के दौरान और उसके बाद रचे गए साहित्य में जहां विस्थापन का दर्द बहुत गहराई से सामने आया, वहीं 2021 में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में हुई मौतों और आदमी की असहायता और करुणा को साहित्य के विभिन्न रूपों में पेश किया गया। अभी यह सिलसिला जारी है और लंबे समय तक यह कविता, कहानी, उपन्यास और डायरी जैसे रूपों में सामने आता रहेगा। उनका कहना है कि जिस तरह विश्वयुद्ध के बाद पोस्ट वर्ल्डवार लिटरेचर का दौर था, वैसे ही पोस्ट कोरोना पोएट्री, फिक्शन और अन्य लेखन का एक रचनात्मक आंदोलन दिखाई दे रहा है।

मदन कश्यप की लॉकडाउन डायरी भी छपकर लगभग तैयार है। 2021 में श्रीप्रकाश शुक्ल की 'महामारी और कविता' के अलावा अरुण होता के संपादन में 'तिमिर में ज्योति जैसे' और कौशल किशोर के संपादन में 'दर्द के काफिले' जैसे कई महत्वपूर्ण संग्रह आए हैं, जिनमें कोरोना काल के दौरान रची गई कविताएं, आलेख और संस्मरण शामिल हैं।

कवि और संस्कृतिकर्मी कौशल किशोर बताते हैं कि इस महामारी के दौर में सभी संवेदनशील रचनाकारों ने सृजनात्मक हस्तक्षेप किया और इस दौरान रची गई कविताएं, कहानियां और संस्मरण अपने समय के दस्तावेज हैं। जब भी ऐसा कोई बड़ा संकट आया है, साहित्यकारों ने अपने दायित्व का निर्वाह किया है। इस बार भी ऐसा ही देखने में आ रहा है। इस बार तो कोरोना ही नहीं, दूसरी तरह की तमाम परिस्थितियां भी झेलनी पड़ रही हैं, जिसकी अभिव्यक्ति रचनाओं में हो रही है। इसी दौरान सेतु प्रकाशन ने कई महत्वपूर्ण पुस्तकें छापीं। आनंद स्वरूप वर्मा का 'पत्रकारिता का अंधा युग' से लेकर रजा फाउंडेशन के साथ कई किताबों की शृंखला, ज्ञानरंजन की किताब 'जैसे अमरूद की खुशबू', जयप्रकाश चौकसे का 'सिनेमा जलसाघर', प्रचंड प्रवीर का 'कल की बात ख्र षडज, ऋषभ और गांधार', रणवीर सिंह की पारसी थिएटर पर एक महत्वपूर्ण किताब, संजीव की 'पुरबी बयार', आधुनिक हिन्दी रंगमंच और हबीब तनवीर के रंगकर्म पर अमितेश कुमार की किताब 'वैकल्पिक विन्यास', चंडी प्रसाद भट्ट की जीवनगाथा, फणीश्वरनाथ रेणु पर भारत यायावर की पुस्तकें और ऐसी तमाम पुस्तकें जो अलग अलग विषयों और संदर्भों में रची गईं।

ताजी-रसीली गाजर के 10 मीठे गुण

लाल और मीठी गाजर को देखकर तुंरत हलवे की याद आ जाती है। निश्चित तौर पर गाजर के इस्तेमाल से बनने वाला हलवा है ही इतना लाजवाब। गाजर न सिर्फ स्वाद में अच्छी होती है बल्कि इसमें आपको तंदुरुस्त रखने के लिए बहुत सारे खास गुण होते हैं।

यह आपको स्वस्थ रखने के साथ साथ आपकी आंखों की रोशनी को बढ़ाती है। गाजर का नियमित इस्तेमाल आपके बालों और त्वचा के लिए भी बहुत लाभकारी है। गाजर के ज्यूस को अपनी रोजाना की डाइट का हिस्सा बना लीजिए क्योंकि यह स्वादिष्ट होने के साथ बहुत गुणकारी है।

1.गाजर के ज्यूस को खास गुणों से भरपूर बनाने का काम इसमें मौजूद बीटा-केरोटिन, विटामिंस और पोटेशियम करते हैं। बीटा-केरोटिन से गाजर विटामिन ए का सबसे प्रभावकारी स्त्रोत बनती है। गाजर से शरीर के इम्यून सिस्टम को ताकत मिलती है। विटामिन ए से न केवल आपकी आंखों की रोशनी बढ़ती है बल्कि गाजर के ज्यूस का नियमित इस्तेमाल दिल की बीमारियों से भी आपको बचाए रखता है।

2.गाजर के ज्यूस में होने वाला पोटेशियम शरीर में कोलेस्ट्रोल के स्तर को कम करता है। गाजर में लीवर को ठीक रखने का भी गुण होता है। पोटेशियम, मैगनीज और मैगनेशियम के साथ मिलकर ब्लड शुगर के स्तर को सामान्य रखता है और इस तरह से शरीर में डायबीटिज के खतरे को कम करता है।

3.गाजर के ज्यूस में विटामिन सी होता है जो कि चोट लगने पर रक्त के थक्के जमने में मदद करता है और खून का बहना रोकता है। विटामिन सी चोट ठीक करने में कारगर है। गाजर में मौजूद विटामिन ए घाव ठीक करने के साथ साथ मसूडों को भी स्वस्थ रखता है।

4. गाजर के ज्यूस में कैंसर से लड़ने का गुण होता है। इसमें केरोटेनोइड नाम का एक खास तत्व होता है जिसे प्रोस्टेट, कोलोन, और स्तन कैंसर से लड़ने में बहुत ही कारगर समझा जाता है।

5. गाजर का ज्यूस शरीर में प्रोटीन की कमी को भी पूरा करने के साथ साथ शरीर को पर्याप्त मात्रा में केल्सियम भी प्रदान करके हड्डियों को मजबूती देता है।

6. गाजर का ज्यूस लीवर को साफ करता है। शरीर में पैदा होने वाले विभिन्न तरह के जहर गाजर के ज्यूस के उपयोग से बाहर निकल जाते हैं। गाजर का ज्यूस लीवर को ताकत देकर उसकी काम करने की क्षमता बढ़ाता है। गाजर का ज्यूस वजन कम करने में भी मदद करता है।

7. गाजर का ज्यूस बच्चे के गर्भावस्था के लिए खास तौर पर लाभकारी है। इसके उपयोग से बच्चे और मां दोनों के स्वास्थ्य में सुधार आता है।

8. गाजर के ज्यूस से मां के दूध की गुणवत्ता बढ़ जाती है।

9. गाजर का ज्यूस गर्भ में पल रहे बच्चे को इन्फेक्शंस से बचाए रखता है।

10.गाजर का ज्यूस वजन करने की कोशिश कर रहे लोगों के लिए बहुत कारगर है क्योंकि इसमें कैलोरी की मात्रा बहुत कम होती है। कम कैलोरी के कारण यह बहुत अच्छा हेल्दी ड्रिंक है। गाजर का ज्यूस अपने खास गुणों के कारण लगभग सभी डाइट प्लान का हिस्सा बनता है।

हरी मटर के 10 बेहतरीन लाभ

ठंड के मौसम में हरी सब्जियों की बहार होती है। इस सब्जियों के बीच हरी मटर चार चांद लगा देती है। इतना ही नहीं मटर की मौजूदगी भोजन के प्रति आपकी रुचि के दुगुना कर देती है। सब्जी को या पुलाव, पराठे हों या पोहा, ठंड के दिनों में बगैर मटर के सब अधूरा ही होता है।अब आप मटर को इतना ही पसंद करते हैं, तो चलिए हम आपको इसके फायदे भी बता देते हैं। स्वाद, सेहत और सौंदर्य का अनोखा मिश्रण है हरी मटर। जानिए हरी मटर के यह 10 बेहतरीन फायदे

1मटर खाने का सबसे बड़ा फायदा है कि यह कोलेस्ट्रॉल की मात्रा को कम करता है और आपको मोटापे के साथ-साथ अन्य कई बीमारियों से बचाता है। यह ब्लड कोलेस्ट्रॉल को भी कम करता है।

2चूंकि यह शरीर में और रक्त में कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करता है, इसलिए इसके सेवन से दिल की बीमारियों का खतरा भी कम होता है। प्रतिदिन हरी मटर का सेवन करना आपके दिल को स्वस्थ रखने में सहायक होता है।

3आकार में भले ही मटर छोटा हो लेकिन यह कैंसर जैसी बीमारियों से भी आपको छुटकारा दिला सकता है। इसे नियमित खाने से कैंसर की बीमारी का खतरा कम होता है। खासतौर से पेट के कैंसर में मटर बहुत लाभकारी है।

4मटर के दाने फाइबर से भरपूर होते हैं, जो आपको उर्जावान बनाए रखते हैं। हरी मटर को नियमित खाने से आप लंबे समय तक जवां नजर आते हैं और बढ़ती उम्र का असर जल्दी दिखाई नहीं देता।

5गर्भवती महिलाओं के लिए हरी मटर काफी फायदेमंद है। यह गर्भवती महिला के साथ-साथ भ्रूण को भी पर्याप्त पोषण देती है। इसके अलावा सामान्य महिलाओं में माहवारी की समस्याओं से छुटकारा दिलाने में मटर सहायक होती है।

6हरी मटर में प्रोटीन के साथ ही विटामिन-के की मात्रा भरपूर होती है, जो हड्डियों की बीमारियों और खासतौर से ऑस्टियोपोरोसिस से बचाव करने में सहायक होती है।

7अगर आप चेहरे पर झाइयों से परेशान हैं, तो मटर के पेस्ट को चेहरे पर लगाकर आधे घंटे के बाद धो लें। प्रतिदिन इस प्रयोग को करें। अन्य दिनों में मटर के आटे का प्रयोग भी कर सकते हैं।

8मटर के दानों का दरदरा पेस्ट त्वचा के लिए बेहतरीन स्क्रब है। इससे आपकी त्वचा को पोषण मिलेगा और चेहरा बेदाग होगा। धीरे-धीरे चेहरे की चमक बढ़ जाएगी।

9यदि आपको लगता है कि आप रोजाना की छोटी-छोटी चीजें याद नहीं रख पाते, तो हरी मटर का नियमित सेवन कीजिए। यह आपकी स्मरण शक्ति को बढ़ाने में मदद करेगी।

10शरीर के किसी भी स्थान पर जल जाने की स्थिति में मटर के दानों का महीन लेप लगाने से आराम होता है। यह जले हुए स्थान पर ठंडक प्रदान करने के साथ घाव को बढ़ने नहीं देगा।

माधुरी दीक्षित जल दान अभियान से जुडीं

जल शोधक ब्रांड, अक्वागार्ड के साथ उसके सद्भावना दूत के रूप में जुडी अभिनेत्री माधुरी दीक्षित नेने ने जल दान के संकल्प के साथ जरूरतमंद लोगों की मदद करने के लिए कदम आगे बढाया है। उन्होंने लोगों से पानी साझा करने और एक जीवन रक्षक प्रभाव खडा करने का आग्रह किया है। स्वास्थ्य और स्वच्छता कंपनी, यूरेका फोर्ब्स ने जल दान अभियान के साथ एक सामाजिक आंदोलन शुरू किया है। इसमें जरूरतमंद लोगों को रोजाना पांच लीटर स्वच्छ और स्वस्थ पेयजल दान करने के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। माधुरी ने जल दान नामक एक भावनात्मक रूप से अपील करने वाली डिजिटल फिल्म में काम किया है। यह फिल्म उपभोक्ताओं को छोटे कदमों से बड़े बदलाव करने के लिए प्रोत्साहित करती है। इस फिल्म के माध्यम से माधुरी ने लोगों से उनका रवैया बदलने का आग्रह किया है। ट्राइटन कम्युनिकेशन्स द्वारा तैयार किए गए इस वीडियो को सप्ताह के प्रारंभ में वीडियो शेयरिंग साइट यूट्यूब पर जारी किया गया।

युविका के लिए सौभाग्यशाली रहा बिग बॉस

कलर्स चैनल पर प्रसारित होने वाले रियलिटी शो की प्रतियोगी युविका चौधरी भले ही बिग बॉस के घर से बाहर आ गई हों लेकिन उनका मानना है कि बिग बॉस नौ में भाग लेना सौभाग्यशाली रहा।

अभिनेत्री युविका चौधरी का कहना है कि आपको जीवन में केवल एक बार बिग बॉस का अनुभव मिलता है और वह यह कहना चाहती है कि उनका अनुभव सौभाग्यशाली रहा।

युविका को नहीं लगता था कि वह जिंदगी की किसी भी चीज को छोडकर दूर रह सकती हैं विशेष रूप से फोन, परिवार और दोस्तों के बिना। गौरतलब है कि बिग बॉस के घर से बाहर होने वाली युविका पांचवी प्रतियोगी थीं।

गर्मियों में वनाग्नि से निपटने को प्रशासन सतर्क, फायर सीजन को लेकर हुई तैयारियां

अल्मोड़ा। जनपद में आगामी गर्मी के मौसम के दौरान जंगलों में लगने वाली आग की घटनाओं पर प्रभावी नियंत्रण के लिए जिला प्रशासन और वन

विभाग ने व्यापक तैयारियां शुरू कर दी हैं। फायर सीजन को देखते हुए अल्मोड़ा वन विभाग ने जिले भर में 147 क्रू स्टेशन स्थापित कर दिए हैं, जहां 550 फायर वाचरों की तैनाती की गई है। इसके साथ ही राजस्व विभाग, लोक निर्माण विभाग और फायर ब्रिगेड को भी समन्वय के साथ कार्य करने के निर्देश दिए गए हैं, ताकि किसी भी आपात स्थिति में त्वरित कार्रवाई की जा सके। इस वर्ष सर्दियों में अपेक्षित वर्षा नहीं होने के कारण कई क्षेत्रों में जंगल अपेक्षाकृत शुष्क बने हुए हैं और कुछ स्थानों पर आग की घटनाएं सामने आ चुकी हैं। ऐसे हालात को देखते हुए प्रशासन ने पहले से ही सतर्कता बढ़ा दी है। अल्मोड़ा वन प्रभाग के प्रभागीय वनाधिकारी दीपक सिंह ने बताया कि वनाग्नि पर नियंत्रण के लिए विभागीय अमले के साथ ग्राम प्रहरी और युवक मंगल दलों का भी सहयोग लिया जाएगा, जिससे समय रहते आग पर काबू पाया जा सके। वनाग्नि से निपटने की रणनीति में इस बार आपदा मित्रों को भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी गई है। जिले में 184 आपदा मित्रों को विशेष प्रशिक्षण दिया जा चुका है, जिन्हें 11 तहसीलों में तैनात किया जाएगा। ये आपदा मित्र जंगलों पर नजर रखने के साथ-साथ ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को आग से बचाव के प्रति जागरूक भी करेंगे। ग्रामीण इलाकों में पानी की कमी के कारण आग बुझाने में आने वाली दिक्कतों को देखते हुए इस बार प्राकृतिक जल स्रोतों के उपयोग की योजना बनाई गई है। वन विभाग को आवश्यकता पड़ने पर जल संस्थान की ओर से पानी की आपूर्ति भी सुनिश्चित कराई जाएगी। सिविल सोयम वन प्रभाग के प्रभागीय वनाधिकारी प्रदीप धौलाखंडी ने बताया कि फायर सीजन के मद्देनजर सभी आवश्यक व्यवस्थाएं पूरी कर ली गई हैं

बीडीसी बैठक में अनुपस्थित रहे अधिकारियों का वेतन रोकने के निर्देश

चमोली। विकासखंड ज्योतिर्मठ की पहली बीडीसी बैठक में मुख्य विकास अधिकारी ने अनुपस्थित अधिकारियों का वेतन रोकने के निर्देश दिए। वहीं कई अधिकारियों को योजनाओं की सही जानकारी भी नहीं थी। इस पर सीडीओ ने अधिकारियों को बैठकों में पूरी तैयारी के साथ आने और योजनाओं से लेकर क्षेत्र की पूरी जानकारी रखने के निर्देश दिए। पंचायत चुनाव के बाद ज्योतिर्मठ विकासखंड की बृहस्पतिवार को ब्लॉक सभागार में प्रथम बैठक ब्लॉक प्रमुख अनूप नेगी की अध्यक्षता में हुई। बैठक में मुख्य विकास अधिकारी डॉ. अभिषेक त्रिपाठी भी बैठक में मौजूद रहे। सदस्यों ने सबसे अधिक मामले लोनिवि, शिक्षा और पेयजल संबंधी उठाए गए लेकिन बैठक में लोनिवि, शिक्षा विभाग, जल निगम, यूपीसीएल व सिंचाई विभाग के सक्षम अधिकारी अनुपस्थित रहे। जो अधिकारी वहां मौजूद थे वे न तो योजनाओं की सही जानकारी दे पाए न ही उन्हें क्षेत्र की उचित जानकारी थी। इस पर सीडीओ ने अनुपस्थित अधिकारियों का वेतन रोकने के निर्देश दिए। इसके बाद सदस्यों ने मारवाड़ी से थैंग मोटर मार्ग, हेलंग-उर्गम सड़क, सलूड़-डुंग्रा सड़क की बदहाल स्थिति को रखा। इसके अलावा अन्य क्षेत्र की सड़कों की समस्याओं का मुद्दा भी सदस्यों ने उठाया। बड़ागांव की प्रधान वीना देवी ने कहा कि जीआईसी बड़ागांव में सफाई कर्मी नहीं होने से बच्चों को सफाई करनी पड़ती है, विद्यालय में तत्काल सफाई कर्मी की नियुक्ति की जाए। पगनों के ग्राम प्रधान रमेश चंद्र ने कहा कि आपदा के बाद से प्राथमिक विद्यालय पंचायत भवन में संचालित हो रहा है। उन्होंने जल्द भवन निर्माण की मांग की। मलारी के प्रधान देव सिंह राणा ने गांव की पेयजल लाइन को ठीक कराने की मांग की और कई समस्याएं भी रखीं।

तीन माह से राशन की दुकानों में चावल की आपूर्ति ठप, उपभोक्ता परेशान

नई टिहरी(। विकासखंड की राशन की दुकानों में नवंबर 2025 से चावल की आपूर्ति न होने के कारण बीपीएल व अंत्योदय कार्डधारकों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। बड़ी संख्या में उपभोक्ता सरकारी राशन पर निर्भर हैं लेकिन पिछले तीन माह से चावल न मिलने से उन्हें खुले बाजार से महंगे दामों पर चावल खरीदना पड़ रहा है। क्षेत्र पंचायत सदस्य रघुवीर सिंह भंडारी एवं ग्राम प्रधान लक्ष्मोली सुरेश नेगी ने बताया कि सस्ता गल्ला दुकानों में राशन आपूर्ति ठप होने से गरीब परिवारों को 30 से 40 रुपये प्रति किलो चावल व 35 से 37 रुपये प्रति किलो आटा खरीदना पड़ रहा है। उन्होंने कहा कि ट्रकों के लिए पर्याप्त लोड पूरा नहीं हो पाने से कई क्षेत्रों में गेहूं भी नहीं पहुंच पा रहा है। इस संबंध में खाद्यपूर्ति निरीक्षक मलेथा ललित मोहन कठैत ने बताया कि पिछले तीन माह में गोदाम को बीपीएल कार्डधारकों के लिए मात्र दो ट्रक चावल ही प्राप्त हो सके हैं। हालांकि, गेहूं की पूरी खेप गोदाम में पहुंच चुकी है जिसे अब सस्ता गल्ला दुकानों तक भेजा जा रहा है। गोदाम में चावल न पहुंचने से खाद्यान्न समस्या बनी हुई है। जैसे ही गोदाम में चावल उपलब्ध होगा सरकारी सस्ता गल्ला दुकानों तक पहुंचाया जाएगा। फोर्टिफाइड चावल की प्रक्रिया के चलते नवंबर व दिसंबर में चावल की आपूर्ति बाधित रही। आज 15 ट्रक मुख्य गोदाम में चावल के लिए भेजे गए हैं।

वरिष्ठ अधिवक्ता शैलेन्द्र मिश्रा को किया सम्मानित

रुद्रपुर। वरिष्ठ अधिवक्ता शैलेन्द्र मिश्रा को उनकी सराहनीय सेवाओं के लिए बार एसोसिएशन के अध्यक्ष गिरिजेश खुल्वे,सचिव यशवंत सिंह चौहान तथा द्वितीय अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश रीतेश कुमार श्रीवास्तव द्वारा शॉल उढ़ाकर सम्मानित किया गया। अध्यक्ष गिरिजेश खुल्वे ने कहा कि शैलेंद्र कुमार मिश्रा एडवोकेट काफी लंबे समय से सफलतापूर्वक अधिवक्ता कार्य कर रहे हैं । उनके द्वारा किए गए सराहनीय कार्यों के लिए उन्हें सम्मानित किया जा रहा है। वरिष्ठ अधिवक्ता शैलेंद्र कुमार मिश्रा को पूर्व में उत्तराखंड रत्न तथा काशीपुर गौरव की उपाधि से भी सम्मानित किया जा चुका है। इस मौके पर न्यायिक अधिकारी द्वितीय अपर जिला जज रीतेश कुमार श्रीवास्तव, न्यायिक मजिस्ट्रेट विनीत कुमार श्रीवास्तव, सिविल जज जूनियर डिवीजन पूनम तोड़ी, प्रथम अपर सिविल जज दीप्ति पंत, द्वितीय अपर सिविल जज आयुशा फरहीन, तृतीया अपर सिविल जज सृष्टि बनियाल सहित अधिवक्ता मौजूद रहे।

585 ग्रामीणों ने उठाया निशुल्क स्वास्थ्य शिविर का लाभ

रुड़की राजकीय प्राथमिक विद्यालय बेलड़ा में गुरुवार को नि:शुल्क स्वास्थ्य शिविर तथा रक्तदान शिविर में 585 लोगों ने स्वास्थ्य की जांच करवाई। साथ ही 36 लोगों ने रक्तदान किया। शिविर का उदघाटन भाजपा महिला मोर्चा प्रदेश उपाध्यक्ष रोमा सैनी और बीडीओ सुमन कुटियाल ने किया। जया मैक्सवेल सुपर स्पेशलिटी अस्पताल बहादराबाद की डॉ. नेहा ने प्रसव पूर्व एवं प्रसव बाद देखभाल की जानकारी दी। डॉ. आमिर ने कुपोषण तथा एनीमिया के कारण, लक्षण और बचाव के उपायों पर प्रकाश डाला। इस मौके पर डॉ. प्रिया, डॉ. नेहा, डॉ. आमिर,

डॉ. कुलदीप, डॉ. राधा, डॉ. सना, समाज कल्याण अनुश्रवण समिति के उपाध्यक्ष देशराज कर्नवाल, सुशील त्यागी, प्रमोद चौधरी, शिव कुमार, सतेंद्र, अरविंद, ग्राम प्रधान सचिन कुमार, गीता, रजिंद्र कौर, कविता, शबाना आदि मौजूद रहे।

घरेलू उत्पादों को जोड़कर स्वरोजगार करने पर हुई चर्चा

पिथौरागढ़। बारबीसी के ग्रामीणों ने खुली बैठक कर पर्यटकों को आकर्षित करने के लिए पर्यटन विकास को लेकर चर्चा की। ग्रामीणों ने स्वरोजगार को लेकर भी अपनी बात रखी,नर्सरी से 12वीं तक के सीबीएसई स्कूल की स्थापना को लेकर भी वार्ता हुई। पीजीआई कॉलेज बुंगाछीना में वाइस चेयरमैन जितेंद्र हनेरी की अध्यक्षता में बारबीसी गांव की खुली बैठक हुई। स्थानीय लोगों ने बैठक में शिक्षा क्षेत्र को बढ़ावा देने वाले स्व.नारायण लाल हनेरी को याद किया। वक्ताओं ने कहा कि टिहरी गढ़वाल का रौतू की बेली गाँव उत्तराखंड में पनीर वाला गाँव के नाम से प्रसिद्ध है

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।